स्थापना दिवस अंक
नवंबर, 2022

मासिक न्यूजलेटर

# पुनर्नवा

आशाओं के दीप.....हौसले का सूरज

प्राधिकरण का 15वां स्थापना दिवस

दिनांक – 8 नवंबर, 2022

स्थान – अधिवेशन भवन, पटना

## बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

# ठनके से लोगों को बचाने की महत्वाकांक्षी पहल

राज्य में वज्रपात की घटनाओं में हर वर्ष सैकड़ों लोगों की मौत होती है। घायलों की तादाद भी बहुत होती है। एक बड़ी आपदा के रूप में यह हमारे सामने है। वर्ष–2020 में 443 और वर्ष–2021 में 276 लोगों की मृत्यु वज्रपात में हो गई। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण वज्रपात की घटनाओं से होनेवाले नुकसान को कम करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्राधिकरण स्तर पर किए गए एक प्राथमिक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रो में वज्रपात से होनेवाली मृत्यु अधिक है। आमतौर पर बरसात के दिनों में वज्रपात की घटनाएं ज्यादा होती हैं। लेकिन अध्ययन यह बात भी सामने आई कि ठनके से मृत्यु मानसून के पूर्व एवं बाद में भी हो रही है। इससे सबसे ज्यादा प्रभावित कृषि–पशुपालन की गतिविधियों से जुड़े लोग होते हैं। महज किसान–मजदूर–पशुपालकों की ही मौत इन घटनाओं में नहीं होती। निरीह पशु भी हताहत होते हैं।

वज्रपात की घटनाओं में बचाव हेतु लोगों को जागरूक करने और उन्हें सुरक्षित रखने के उद्देश्य से प्राधिकरण ने एक महत्वपूर्ण पहल की है। इसके तहत वज्रपात से अति प्रभावित राज्य के सात जिलों में पूर्व चेतावनी हेतु सार्वजनिक स्थलों पर हूटर, सायरन लगाए जाएंगे। ठनके को रोकने के लिए ऊंची जगहों पर अरेस्टर लगाए जाने की भी योजना है।

## बड़े काम का इंद्रवज्र एप्प

वज्रपात से बचाव के लिए खुद को जागरूक करना होगा। खासकर मानसून के दौरान लोगों को कृषि कार्य, पशुपालन अथवा घर से बाहर रहने के दौरान बचाव के उपायों को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए। यदि आसमान में बादल हैं या बिजली कड़क रही है तो घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। यदि निकल भी गये तो बिजली चमकने पर पक्के मकान में शरण लेने, बिजली की सुचालक वस्तुओं से दूर रहने, बड़े पेड़ों के समीप नहीं ठहरने, यदि वाहन में हों तो वाहन में ही रहकर बचा जा सकता है। इंद्रवज्र एप्प से वज्रपात की सूचना 30–40 मिनट पहले मिल सकती है। इसलिए आवश्यक है कि आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार के इस एप्प को एंड्रवायड मोबाइल में डाउनलोड कर लिया जाए। इस एप्प के माध्यम से सूचना मिलते ही बचाव के उपाय में जुट जाना चाहिए। यदि वज्रपात की सूचना 30 से 40 मिनट पहले मिल जाती है तो बचाव के लिए सुरक्षित जगहों तक पहुंचा जा सकता है।

# विषय सूची


| | | पे.नं. |
|---|---|---|
| 1 | संपादकीय | 4 |
| 2 | राहत के साथ–साथ जागरूकता का भी चले बड़ा अभियान : मुख्यमंत्री | 5 |
| 3 | हर खेत तक सिंचाई का पानी पहुंचाना है | 8 |
| 4 | यह हम लोगों का सौभाग्य है कि ऐसा नेतृत्व हमें मिला | 13 |
| 5 | आज भी कोरोना की नियमित रिपोर्ट लेते हैं सीएम | 15 |
| 6 | प्राधिकरण को सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहूंगा | 16 |
| 7 | मिलकर काम करें तो आपदामुक्त भारत का सपना होगा साकार | 17 |
| 8 | संवाद, सहयोग और समन्वय का सिलसिला आगे बढ़े | 20 |
| 9 | स्थापना दिवस : कैमरे की नजर में | 21 |
| 10 | सोनपुर मेला में प्राधिकरण के पैवेलियन का उद्घाटन | 22 |
| 11 | सामंजस्य का प्रतीक – सोनपुर मेला! | 26 |
| 12 | सात जिलों में चलेगी वज्रपात से बचाव संबंधी कार्ययोजना | 28 |
| 13 | आपदाओं से लड़ने को युवा हो रहे तैयार | 29 |
| 14 | जीविका दीदियों ने भी कसी कमर | 30 |
| 15 | कोसी क्षेत्र में बाढ़ पूर्वानुमान पर आइआइएससी करेगा काम | 31 |
| 16 | डेंगू से पीड़ित मरीजों व परिजनों हेतु सूचना | 32 |


**बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मासिक न्यूजलेटर पुनर्नवा के नवंबर, 2022 अंक में क्या है खास**

प्राधिकरण परिवार के लिए नवंबर का महीना कई मायनों में यादगार रहा। इस महीने एक ओर जहां हमने अपना 15वां स्थापना दिवस समारोह मनाया, वहीं दूसरी ओर विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेले में मासव्यापी जन जागरूकता का बड़ा अभियान चलाया गया। इन दोनों आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें इस अंक में।

पाठकों से अनुरोध है कि अपने सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं। सोशल मीडिया पर हमारी मौजूदगी यहां है :

www.facebook.com/bsdma | www.instagram.com/bsdmabihar | www.twitter.com/BsdmaBihar

# संपादकीय

विकास ऐसा हो जो आफत से बचाए,
ऐसा न हो कि आफत बन जाए।

**संरक्षक मंडल**

डॉ. उदय कांत मिश्र, भा.अभि.से. (से.नि.)
उपाध्यक्ष, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

पी.एन. राय, भा.पु.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

मनीष कुमार वर्मा, भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

मीनेंद्र कुमार, भा.प्र.से.
सचिव, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

वरीय संपादक : कुलभूषण कुमार गोपाल
सहायक संपादक : संदीप कमल

**संपादक मंडल**

वरीय सलाहकार : नीरज कुमार सिंह, दिलीप कुमार।
परियोजना पदाधिकारी : डॉ. जीवन कुमार, अशोक कुमार शर्मा, प्रवीण कुमार।
आई.टी. : सुश्री सुम्बुल अफरोज, मनोज कुमार

ई.मेल.: sr.editor@bsdma.org
वेबसाइटः www.bsdma.org

**नोटः–** पुनर्नवा में प्रकाशित आलेख लेखकों के व्यक्तिगत एवं अध्ययन स्वरूप विचार हैं। लेखक द्वारा व्यक्त विचारों के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तरदायी नहीं है।

**आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।**

## गुम होते नदी और तालाब

गुजरे अक्टूबर माह में देश की बड़ी आबादी पर्व–त्योहार, पूजा–पाठ, साधना–उपासना में लीन रही। दशहरा, दीपावली से लेकर छठ पूजा, सभी इसी एक माह में संपन्न हो गए। छठ सूर्योपासना का बहुत ही नेम–निष्ठा वाला चारदिनी कठिन व्रत है। नदियों, तालाबों, जलाशयों पर छठ की छटा देखते बनती है। चारों ओर सफाई का आलम रहता है। चार–छह दिनों तक सब कुछ इतना साफ–सुथरा और पावन–पवित्र नजर आया कि एकबारगी खुद ही लोग चौंक उठे। क्या यह वही जगह है, जहां सालों भर गंदगी पसरी रहती है? क्या यह वही तालाब, वही नदी है, जिसे हम हमेशा मैली करते हैं, गंदा रखते हैं?

इधर, छठ पूजा करनेवालों की तादाद भी बढ़ी है। पोखरों और छोटी नदियों की संख्या घटी है। छठ के लिए घाट अब कम पड़ने लगे हैं। लोग घाट छेकने को मारपीट पर उतारू हो जाते हैं। आंगन में या फिर मकानों की छतों पर हौदा बनाकर लोग छठ मनाने लगे हैं। कभी बिहार में दो लाख से अधिक तालाब हुआ करते थे, अब सिर्फ 98 हजार बचे हैं। यह संख्या भी करीब पांच साल पुरानी है। निश्चित ही आज हालात और बुरे होंगे। झील भर दिए गए, तालाब बिक गए। इसी तरह बिहार में छोटी नदियों की संख्या कभी 200 से अधिक थी। महज 50 साल पहले 80 नदियों के नाम संकलित किए गए थे। आज कितनी नदियां बची हैं? छोटी नदियां और धाराएं खेतों और बस्तियों में बदल दी गईं। राजधानी पटना के पास दानापुर और बिहटा के बीच कभी दनवां नदी बहती थी। आज इसका नामो–निशान नहीं। गांव से लेकर शहर तक हर जगह एक ही कहानी है।

आखिर कोई भी यह कैसे भरोसा करेगा कि यह सब उसी राज्य में हो रहा है, जहां छठ सबसे बड़ा त्योहार है। प्रकृति के पर्व के रूप में हम इसे मनाते हैं। प्रकृति का यह स्वरूप बचाए रखना है। अंततः प्रकृति ही सभी जीवों की रक्षा करती है। काश, छठ पर्व का यह संदेश हम सिर्फ चार दिन नहीं,जीवनपर्यंत याद रखते।

## प्राधिकरण का 15वां स्थापना दिवस समारोह संपन्न

# राहत के साथ–साथ जागरूकता का भी चले बड़ा अभियान : मुख्यमंत्री

### –राज्य भर से आए लोग, पड़ोसी राज्यों से जुटे तकनीकी विशेषज्ञ व शोधार्थी

'किसी भी आपदा में पीड़ितों तक फौरन राहत पहुंचाना सरकार का प्राथमिक दायित्व है। मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि सरकार के खजाने पर आपदा पीड़ितों का पहला अधिकार है। लेकिन इसके साथ–साथ ही आपदाओं को लेकर हमें सभी वर्ग और समुदाय के लोगों को पूरी तरह जागरूक कर देना होगा। सभी लोग जब आपदा को लेकर जागरूक हो जाएंगे, तो जाहिर है सुरक्षित रहेंगे।' उक्त बातें माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सह माननीय अध्यक्ष, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण श्री नीतीश कुमार ने 08 नवंबर को पटना के अधिवेशन भवन में आयोजित प्राधिकरण के 15वें स्थापना दिवस समारोह में कही।

आपदा प्रबंधन के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने बताया कि जब वे केंद्र में कृषि मंत्री थे, तब पहली बार आपदा प्रबंधन को लेकर एक उच्चस्तरीय कमेटी बनाई गई। उस समय आपदा का काम भी कृषि विभाग के ही अधीन था। बिहार कैडर के आईएएस अधिकारी श्री अनिल कुमार सिन्हा उस समय कृषि विभाग में थे। उन्होंने इस कमेटी में रहते हुए आपदा प्रबंधन के हर एक पहलू पर बारीकी से काम किया। आज आपदा प्रबंधन का जो स्वरूप हमारे सामने है, वह सब तत्कालीन अटल बिहारी वाजपेयी सरकार की ही देन है। उसी वक्त सब कुछ तय हो गया था। बाद में केंद्र में दूसरी सरकार बनी और प्राधिकरण वगैरह का गठन हुआ। वर्ष 2005 में बिहार आने के बाद मैंने यहां भी इस पर काम शुरू किया। वर्ष–2007 में पहले पहल आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का गठन यहां कराया। अगले साल पांच राज्यों में प्राधिकरण बनाए गए।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के 'मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा अभियान' की तारीफ करते हुए श्री कुमार ने कहा कि छात्रों को आपदाओं के बारे में हम पढ़ाई के दौरान ही जागरूक कर रहे हैं। यह अच्छी

बात है। इससे वे भविष्य में भी सुरक्षित रह सकेंगे। हमें सभी लोगों को इसी तरह जागरूक करना होगा। एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, जीविका समूह जैसे संगठन आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। एसडीआरएफ का कार्यक्षेत्र बढ़ाया जा रहा है। इसे अब हम सभी जिलों में लेकर जाएंगे। बल के गठन के लिए भर्तियों का निर्देश दे दिया गया है। आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव के कार्यों की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि अभी छठ के मौके पर 11 जिलों में सूखा राहत वितरित करने में विभाग के सभी लोगों ने बढ़–चढ़कर काम किया। ये काबिलेतारीफ है। समारोह में मौजूद जल संसाधन मंत्री की ओर मुखातिब हो श्री नीतीश कुमार ने कहा कि अब हमारी असली चुनौती राज्य के हर खेत तक पानी पहुंचाने की है ताकि सूखे जैसी आपदा की नौबत ही ना आए। जल संसाधन विभाग की यह बड़ी जवाबदेही है।

राज्य के माननीय वित्त, वाणिज्य–कर एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी ने इस मौके पर कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दूरदर्शी हैं। आपदा प्रबंधन की बुनियाद उन्होंने 1999–2000 में ही रख दी थी। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने आपदाओं से निपटने में जिस मुस्तैदी से काम किया है, वह काबिलेतारीफ है। बचाव व जागरूकता के साथ–साथ सरकार आपदापीड़ितों को बड़े पैमाने पर राहत पहुंचा रही है, इसकी भी जानकारी लोगों तक पहुंचनी चाहिए। प्राधिकरण को इसका बीड़ा उठाना चाहिए।

इससे पूर्व बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत मिश्र ने कहा कि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में 22 नवंबर, 1999 की तारीख इतिहास के पन्नों में दर्ज है। बतौर कृषि मंत्री श्री नीतीश कुमार ने पहले पहल संसद में जेसी पंत की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय कमेटी बनाने की बात कही थी और उसी कमेटी की अनुशंसा के बाद आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में पूरे देश में कार्य की शुरुआत हुई। राष्ट्रीय स्तर से लेकर जिला स्तर तक आपदा प्रबंधन कोड बनाने की बात इसमें थी। इस कोड में आपदा पूर्व तैयारियां, आपदा के दौरान किए जाने वाले कार्य और आपदा के बाद तीनों का विस्तृत विवरण था। 2001 में भुज में आए भीषण भूकंप के बाद श्री नीतीश कुमार ने तत्कालीन उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ वहां का दौरा किया। इसके बाद ही आपदा प्रबंधन की कल्पना गति पकड़ सकी।

उद्घाटन समारोह में माननीय जल संसाधन मंत्री श्री संजय कुमार झा, माननीय आपदा प्रबंधन मंत्री श्री शाहनवाज, राज्य के मुख्य सचिव श्री अमीर सुबहानी ने भी अपने विचार रखे। आपदा प्रबंधन विभाग के प्रधान सचिव श्री संजय अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। समारोह में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के माननीय सदस्यद्वय श्री पीएन राय व श्री मनीष कुमार वर्मा और प्राधिकरण के पूर्व उपाध्यक्ष श्री अनिल कुमार सिन्हा भी मौजूद थे। प्राधिकरण के सचिव श्री मीनेंद्र कुमार (भा.प्र.से.) ने अतिथियों का स्वागत प्लांट बुके देकर किया।

### :: तकनीकी सत्र में विशेषज्ञों ने रखे विचार ::

इस मौके पर 'संवेदनशील समुदाय पर आपदाओं का प्रभाव, इससे निपटने की चुनौतियां और बेहतर कार्य प्रबंधन' विषय पर क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें देश भर से जुटे वैज्ञानिकों और आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों ने तकनीकी सत्र में अपने–अपने विचार रखे। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के पूर्व उपाध्यक्ष अनिल कुमार सिन्हा ने कहा कि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में ओड़िशा ने अद्भुत कार्य किया है। तमाम राज्यों को इससे सीखना चाहिए। सीएसआईआर, बेंगलुरु के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. केसी गौड़ा ने आपदा पूर्व चेतावनी और भविष्यवाणी विषय पर अपने व्याख्यान में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। मध्य प्रदेश से पधारे श्री सौरभ कुमार सिंह, उत्तर प्रदेश से पहुंचे रिटायर ब्रिगेडियर पीके सिंह, ओड़िशा से श्री मेघनाथ बेहेरा और सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड, रांची के डॉ. किरण जलेम ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में किए जा रहे बेहतर कार्यों और चुनौतियों की जानकारी दी। राज्यों के बीच बेहतर सहयोग व समन्वय पर बल दिया।

### :: प्रदर्शनी में क्या रहा खास ::

इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में आपदाओं से लड़ने की हमारी तैयारी की झलक देखने को मिली। छत्तीसगढ़, एनआईटी, रायपुर में बना शेक टेबल लोगों के आकर्षण का केंद्र रहा। प्रदर्शनी में एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, फायर ब्रिगेड, सिविल डिफेंस, दिव्यांगजनों के हितार्थ काम करने वाली संस्था और एनजीओ के स्टॉल लगाए गए थे।

# हर खेत तक सिंचाई का पानी पहुंचाना है

## माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सह अध्यक्ष श्री नीतीश कुमार का संबोधन

**(मंच पर विराजमान सभी अतिथियों और सभागृह में मौजूद लोगों का अभिवादन करने के बाद)**

बड़ी महत्वपूर्ण बात है। और आपदा प्रबंधन कितना आवश्यक है, इस बारे में सब लोगों ने अपनी बात कही। और खैर....उदय कांत मिश्रा जी जितना बात कह रहे थे तो उनके साथ मेरा रिश्ता आप लोगों को नहीं न पता है। 1969 में ये, हम और कई लोग जेल में थे। पूरे बिहार के जितने भी इंजीनियरिंग कॉलेज के लोग थे, सारे लोगों ने एक साथ आंदोलन किया था क्योंकि पहले जितने लोग इंजीनियरिंग पास करते थे, उनको राज्य सरकार से नौकरी मिलती थी। और जब यह हो गया कि सब लोगों को नौकरी नहीं मिलेगी तो उसी समय 69 में, हम तो पटना इंजीनियरिंग कॉलेज में थे और ये तो भागलपुर में थे, पूरे बिहार के सभी इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र आंदोलन में शामिल हुए। सब लोग पटना में आकर गिरफ्तारी दिए थे तो वहीं पर जब हमलोग जेल के अंदर थे, 69 में, तभी इनसे परिचय हुआ था। समझ गए न, उसी समय। आज समझ लीजिए 53 साल हो गया। तो आज स्वाभाविक है कि जितना पुराना काम किए हैं, वो सब याद रखेंगे। लेकिन एक चीज आप काहे नहीं कहे!

आप समझ लीजिए कि जो हमारे पूर्व उपाध्यक्ष हैं, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के, यहां पर आए हुए हैं। मुझे देखकर खुशी हुई है अनिल कुमार सिन्हा जी को। अनिल कुमार सिन्हा जी को पहली बार हमलोग यहां लेकर आए थे। (मंच पर उपस्थित प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष की ओर इशारा करते हुए) ये जो बोल रहे थे। यही सब बात कर रहे थे। हम कृषि मंत्री थे। इनसे पूछिए, और उसी मंत्रालय में ये थे और आपदा को लेकर जितनी बात हुई थी, इसी व्यक्ति ने एक–एक चीज का अध्ययन कर सारा चीज फाइनल किया था। सबसे पहले केंद्र सरकार में कोई अधिकारी ने इस मामले में सबसे ज्यादा मेहनत किया था, मेरे कार्यकाल में तो इन्होंने किया था। बिहार के ही रहनेवाले हैं। यहीं के रहने वाले थे। वहां थे। अधिकारी थे। और जब उन्होंने इस काम को किया और उस समय तो आप जानते ही हैं कि हमलोगों को एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट में यही सब चीज था। कृषि में ही। आपदा प्रबंधन विभाग नाम का अलग से कोई विभाग नहीं था। कृषि विभाग में ही था।

ये जो बता रहे हैं, जब जो जहां–जहां हो रहा था हम लोग जा रहे थे। देख रहे थे। लेकिन सारी बात जो डिपार्टमेंट के अंदर हो रही थी और जितने बाकी लोग थे सब लोगों ने एक–एक चीज के बारे में बताया था। बिहार से भी जानकारी मिल रही थी और ये काम को देख रहे थे। बहुत अच्छा हुआ। उस समय सरकार ने इसको स्वीकार किया। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा कि बिल्कुल ठीक होना चाहिए और जल्दी से जल्दी आपदा प्रबंधन का अलग होना चाहिए। हम लोग कहते रहे, हो जाना चाहिए। और इसके लिए उन्होंने कमेटी बना दी। सब कुछ किया और आपदा प्रबंधन का सब काम हो गया। उन्हीं के समय काम पूरा हो गया था। लेकिन था क्या कि इसके पहले ही चुनाव हो गया। दूसरे लोगों की सरकार आ गई। लेकिन जो पहले का काम किया हुआ था, ये मत समझिए कि नई सरकार ने किया। पहले ही वाली सरकार ने, श्रद्धेय अटल जी के नेतृत्व वाली सरकार में ही जो काम हो गया था, वही चीज 2005 में भी इसको लागू किया गया। भाई, आप जब ये सब बोले तो ये सामने थे, जरा इनके बारे में भी बोल देते। बड़ी खुशी की बात है। एक–एक काम को इन्होंने किया। और जब हम वहां थे, कृषि मंत्री थे और उसी सिलसिले में कई बार कई जगह जाना पड़ा और उसी समय जो समझ में आ गया तो उसके बाद हुआ कि अलग से इंतजाम होना चाहिए। उसके बाद तो 2005 में हम लोग यहां आ गए। सब जगह घूमे, उसके बाद जो कुछ भी करना था 2007 में हमलोगों ने कमेटी बना दी। देर कर रहा था। फिर हमलोग इन्हीं को लेकर आए। सब काम तेजी से करके हम लोगों ने आपदा प्रबंधन प्राधिकरण शुरू करा दिया। (मंच की तरफ देखते हुए) 2007 के बारे में भी चर्चा कर रहे थे संजय झा जी। जो उस समय हुआ था कि इतने राज्यों में हो गया। यहां हो गया फिर अगले साल पांच और राज्य में हुआ। सब काम करते रहे हम लोग। एक–एक चीज को देखा। कहीं पर इतना ज्यादा वर्षापात के कारण स्थिति खराब हो जाए और दूसरी तरफ सुखाड़ आ जाए तो हमलोगों ने बराबर कहा है कि दोनों स्थिति को देखना पड़ेगा, सिर्फ एक को नहीं, बल्कि दोनों को। एक–एक चीज के बारे में शुरू से और इसके लिए गांधी मैदान में मीटिंग होती है और उसके लिए हम आपको बहुत–बहुत बधाई देते हैं। उदय बाबू, उदय कांत बाबू, उदय कांत मिश्रा बाबू (सभागृह में हंसी), आपको तो कितना बार बताए। आपने बहुत अच्छा काम करना है, किया है। जो हमारी इच्छा थी कि छात्र–छात्राओं को एक–एक बात सीखा दें और एक–एक चीज को जब वो जानेगा कि क्या डिफकल्टी है, कहां पर....फोटो दिखा रहे थे...तो एक–एक चीज के बारे में जब लोगों को समझ में आ जाएगा, जानकारी मिलेगी तो जो पुराने लोग हैं, अब कितने बार बच्चे–बच्ची लोग जो सीख लेते हैं, अपने घर के लोगों को बता देते हैं कि इसमें आप सचेत रहिए।

अभी भी सब नहीं हुआ है। जब बच के रहना है, रहिए। हम लोग तो सबको मदद कर ही रहे हैं। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आपदा पीड़ितों को सहायता देने का ही काम नहीं है। हम तो जिस दिन से बने हैं, कह रहे हैं–सरकार के खजाने पर पहला अधिकार आपदा पीड़ितों का है। (सामने सभागृह में लगे बैनर को देखते हुए) हम आपदा पीड़ित बोलते रहे, इसको बदलकर इन्होंने लिख दिया आपदा प्रभावित। पत्रकार लोग हैं तो आपको तो याद ही होगा कि हम जो बोलते रहे कि सरकार के खजाने पर सबसे पहला अधिकार आपदा पीड़ितों का है। तो ये सोचकर हम लोग जितना सब जगह काम करते रहे। एक–एक चीज का आकलन कराते हैं। एक–एक चीज का अध्ययन कराते हैं और समय के पहले, बरसात आने से पहले, हर साल हम मीटिंग करते हैं।

एक–एक चीज हर जिले के लोगों को क्या–क्या करना है, 5–6 काम करके उनको तैयार रहना है। एक–एक चीज पर ताकि किसी को कोई दिक्कत नहीं होती है। मीटिंग होती है। हम लोग सब कोशिश करते हैं। लेकिन लोगों को एक–एक चीज के बारे में जागरूक कर दें, वह बहुत जरूरी है। अब बच्चे–बच्चियों को, जीविका दीदियों को, हमारे जितने भी शिक्षक हैं, सभी लोगों के लिए जरूरी है। इंजीनियरिंग कॉलेज से लेकर हर जगह एक–एक चीज के बारे में समझना और जानना बहुत जरूरी है।....तो हम देखते हैं और जो कार्यक्रम होता है, 22 तारीख वाला, बिहार दिवस के अवसर पर तो उस दिन सबसे अच्छा कार्यक्रम तो आप ही लोगों का न होता है। हम गए थे देखने, खूब अच्छा लगा। ट्रेनिंग लोग ले रहे हैं। केंद्र का और राज्य का दोनों। केंद्र वाला तो खैर मजबूत है ही। इसी तरह हमने राज्य में तैयार किया। एसडीआरएफ, बिहार का, उनको भी उसी पैटर्न पर हमलोगों ने इनको ट्रेनिंग कराया। उस समय जो केंद्र की सरकार थी, तो हमने कहा था कि भाई यहां पर भेजिए। उसके रहने का भी इंतजाम करा दिया और उनके बाद यहां जो बना उसका भी इंतजाम करवा दिए।

एसडीआरएफ है, तो इसको तो हमलोग अब कर रहे हैं कि विभिन्न जगहों पर सबको रखा जाए। विभिन्न जगहों पर लोगों को रखा जाएगा, खाली यहीं नहीं। और इनकी संख्या बढ़ाइए, हमने कहा है। हमने कहा कि इनकी और संख्या बढ़ा दीजिए ताकि सब जगह लोग मौजूद रहें। और कितना दोनों एनडीआरएफ, एसडीआरएफ के लोग कितना मेहनत करते हैं साहब। लोगों को बचाते हैं, कितना बढ़िया काम ये लोग करते

हैं। किस तरह लोगों को बचाते हैं और लोगों को जो बताया जा रहा, जानकारी दी जा रही है। लोग चीजों को जान रहे हैं, समझ रहे हैं तो ये सब चीज भी कुल मिलाकर काफी अच्छा हो रहा है। और कम से कम अब इसी के आधार पर जब सब लोग जागरूक हो जाएंगे तो आपदा की स्थिति जो आती है, इसमें चाहे सुखाड़ हो या बाढ़ हो, किसी भी स्थिति में और जब सब जागरुक रहेंगे और विभिन्न प्रकार की घटनाएं घटती हैं, उस पर जागरुक रहेंगे तो लोग सुरक्षित रहेंगे अधिक से अधिक। तो इसी सब चीज के लिए है ये सब। खाली लोगों को राहत देने के लिए नहीं है आपदा प्रबंधन प्राधिकरण। यानी लोगों को इसके लिए पूरे तौर पर सब लोगों को एलर्ट कर देना है।

( विषयांतर : दर्शक दीर्घा की ओर देखते हुए–क्या श्रीमान...) खैर, कहने का मतलब यही है कि पूरे तौर पर लोगों में एलर्टनेस आ जाए, जागरूक हो जाएं। जागृति आई है लोगों में और नई पीढ़ी के लोगों को, सब लोगों को आ जाए और खासकर महिलाओं को, जीविका दीदियों को जो महिला समूह हम लोग बनाए हैं, कितना बढ़िया काम कर रही हैं जीविका दीदी। इन सब चीजों के बारे में लोगों को बताती रहेंगी, तो सब जगह पर जीविका समूह है तो वो तो काम करेंगे ही ना भाई। उनके ही मांग पर ना हम लोग शराबबंदी लागू कर दिए तो उन्हीं लोगों के लिए न सब कुछ किए हैं। आपदा के मामले में इतना काम किया जा रहा है। कोई भी चीज, विकास का काम कोई भी चीज का काम कितना बढ़िया कर रही हैं तो इसमें भी आपदा के बारे में लोगों को बताना है। सब लोग एलर्ट रहिए। सब लोग सजग रहिए ताकि कम से कम लोग पीड़ित हों। हमलोग तो मदद करते ही हैं। लोगों ने बता दिया। हम लोग छोड़ते नहीं हैं। जान लीजिए, पूछ लीजिए, चीफ सेक्रेटरी साहब से इनसे हम बराबर पूछते रहते हैं....और अभी जो सुखाड़ आ गया। हमने कहा, राहत में देर नहीं होना चाहिए। (मंच की ओर मुखातिब) वहां बैठे हैं आपदा प्रबंधन के हमारे सचिव। अब आप सोच लीजिए, क्या है आपदा प्रबंधन में हम इनको बनाए। मालूम है जी, इनसे पुराना रिश्ता है ना! पटना जिला में मेरा जन्म हुआ और पिताजी नालंदा के लेकिन आप सोच लीजिए इस आदमी को हम नालंदा में ही रखे हुए थे डीएम। उस वक्त जो वहां काम किया, इतना काम करवाए कि इसीलिए इनको यहां पर काम दिए हुए हैं आपदापीड़ित का भी। भाई, मेरी इच्छा है इसलिए इनको भी आपदा के काम में लगा दिए। इन सब लोगों ने 13 जिला...11 जिला का लिस्ट तैयार कर दिया, जितने पीड़ित थे सबको मदद कर दिया। 3500 रूपया सबको दिया जा रहा है। मदद कर रहे हैं। इसके अलावा भी एक–एक चीज पर नजर है।

बाकी जितने भी अधिकारी हैं, उन सभी अधिकारियों को हर साल मीटिंग करके कहते रहते हैं, कहीं भी आपदा की स्थिति आती है तो उस पर नजर रखिए। कोई भी पीड़ित कष्ट में ना रहे। आज काहे संजय झा जी को बुलाया गया था। जल संसाधन की जिम्मेदारी भी इनकी ही है। जिम्मेदारी बहुत ज्यादा है। अब हम लोग सबकी मदद कर रहे हैं, यह अलग बात है। हर घर नल का जल, हर घर शौचालय, हर घर तक पक्की नली–गली का निर्माण, हर घर तक बिजली...यह सब तो अलग बात है। लेकिन इन सब चीजों के अलावे जो सबसे ज्यादा जरूरी है, वह इस बात की जरूरत है कि आप लोगों के लिए, सबके लिए सिंचाई का प्रबंध कर दीजिए। हर खेत तक लोगों को सिंचाई का पानी पहुंच जाए, यही काम हमलोगों को करना है ताकि लोगों को सूखा का सामना नहीं करना पड़े। इसलिए हमने इनसे कहा कि जरा चलिए आप भी। ये क्या आपदा प्रबंधन का काम नहीं है, खाली आपदा प्रबंधन में लोगों को मदद करना है। यह सब चीज को भी देखना है ताकि लोगों को कष्ट ना हो, कम से कम कष्ट हो। पूरा का पूरा सहयोग लोगों को दिया जाए। जागरूक किया जाए।

**अब हम लोग सबकी मदद कर रहे हैं, यह अलग बात है। हर घर नल का जल, हर घर शौचालय, हर घर तक पक्की नली–गली का निर्माण, हर घर तक बिजली...यह सब तो अलग बात है। लेकिन इन सब चीजों के अलावे जो सबसे ज्यादा जरूरी है, वह इस बात की जरूरत है कि आप लोगों के लिए, सबके लिए सिंचाई का प्रबंध कर दीजिए। हर खेत तक लोगों को सिंचाई का पानी पहुंच जाए, यही काम हमलोगों को करना है ताकि लोगों को सूखा का सामना नहीं करना पड़े।**

अभी तो आप लोगों का लंबा (टेक्निकल सेशन) चलेगा। उसमें उदय बाबू आप सब लोग जो बात करेंगे, उसमें कई चीजें आएंगी। आप बता रहे हैं पांच–छह जिलों (राज्यों) से लोग आए हैं। कुछ और लोग वीडियो कॉन्फ्रेंस से जुड़ रहे हैं। सब लोग अपने–अपने अनुभव बताएंगे। यहां पर हम आपसे आग्रह करेंगे।

अब जरा सुन ल...जो हमारे आप हैं अनिल बाबू, आप अब आप दिल्ली में रहते हैं। बड़ा–बड़ा काम करते हैं। लेकिन हम जरा आपसे भी आग्रह करेंगे कि बिहार में आपदा के लिए जो काम हो रहा है उसमें भी बीच–बीच में आकर जरा सहयोग कीजिए। आइएगा और आपकी जो भी इच्छा होगी, हम सरकार की तरफ से उसी स्थान पर आपको लगवा देंगे। चिंता मत कीजिए। हम तो आपको भूलेंगे नहीं। जीवन भर याद रखेंगे। जब हम केंद्रीय मंत्री थे, हमने शुरू में बता दिया। हमने देखा है कि एक आदमी ने कितना मेहनत किया। एक–एक चीज की जानकारी रखी, तो हम तो भूलेंगे नहीं। हमको ये सब चीज याद रहेगा।

आप सब लोग जो यहां जुटे हैं, आप सबका अभिनंदन है। निश्चित रूप से पूरे बिहार के सब लोगों को अधिक से अधिक लोगों को जरूर प्रशिक्षित कर दीजिए ताकि लोग इन सब चीजों के प्रति जागरूक रहें तो इन्हीं शब्दों के साथ आप सबको मैं विशेष तौर पर बधाई देता हूं। (मंच पर माननीय उपाध्यक्ष से मुखातिब ) और आपने जो चर्चा कर दिया कि इसमें पैसा की कमी है....तो जब आप जो बोल रहे थे, उसी समय हमने चीफ सेक्रेटरी साहब से कह दिया और हमारे जो प्रधान सचिव हैं और भूतपूर्व चीफ सेक्रेटरी हैं, उनको कह दिया और विजय कुमार सिन्हा (चौधरी) जी जो वित्त विभाग के मंत्री हैं, उनको भी कह दिया है इसको देखने के लिए। आपदा प्रबंधन को और जो जरूरत है सहयोग की, पैसे की, सब दिया जाए। आप सभी जुटे, आप सभी को बहुत–बहुत धन्यवाद। बहुत–बहुत बधाई। (समाप्त)

# यह हम लोगों का सौभाग्य है कि ऐसा नेतृत्व हमें मिला

## वित्त, वाणिज्य–कर एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी का संबोधन

**(मंच पर विराजमान माननीय मुख्यमंत्री, अन्य अतिथियों व सभागृह में मौजूद लोगों का अभिवादन करने के उपरांत)**

सबसे पहले मैं आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को 15 वर्ष की सफल यात्रा पूरी करने के लिए बधाई देता हूं। शुभकामनाएं देता हूं। सफल यात्रा हमने यूं ही नहीं कही है क्योंकि अभी आपने जो प्रस्तुति देखी, उसके माध्यम से आपने सब कुछ देखा है। आपदा, चाहे प्राकृतिक हो या मानवजनित, उसका प्रभाव विनाशकारी ही होता है। आपदा प्रबंधन में यूं तो निषेध करने, मतलब इसको रोकने के ही उपाय होते हैं और फिर उसके अलावा भी चाहे जोखिम न्यूनीकरण हो या न्यूनतम रिस्पांस टाइम जो कहते हैं, जो भी चीजें होती हैं, आप देखिएगा 15 साल में जितने विस्तार से, जितने सुगठित रूप से, अपने यहां मानक संचालन प्रक्रिया, जो स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर कहलाती है, बनाई गई है, शायद ही हिंदुस्तान के किसी दूसरे प्रदेश में इस तरह की व्यवस्था है। इसलिए मैंने कहा कि यह सफल यात्रा है।

माननीय मुख्यमंत्री जी के बारे में आप सबने सुना ही कि यह सब इनके दूरदर्शी नेतृत्व का ही परिणाम है। हम लोग तो आज तक जानते थे कि आपदा प्रबंधन सेंडई फ्रेमवर्क के बाद 2015 से 2012–14 के बाद से चल रहा है लेकिन हमारे यहां आपदा प्रबंधन प्राधिकरण 2007 से ही कार्य कर रहा है और आज तो उदय बाबू ने बता ही दिया कि इसकी बुनियाद तो मुख्यमंत्री जी ने 1999 – 2000 में ही यानी आज से 22, 23 साल पहले रख दी थी। तो यह हम लोगों का सौभाग्य है कि ऐसा नेतृत्व हम लोगों को मिला है।

प्राधिकरण को मैं एक और बात के लिए साधुवाद देना चाहता हूं कि आपने सामने जो प्राधिकरण का बैनर लगाया है, मैं समझता हूं कि आपका वह टैगलाइन है– सरकार के खजाने पर आपदा प्रभावितों का पहला अधिकार है। माननीय मुख्यमंत्री जी बराबर कहते रहते हैं और आपदा प्रबंधन से संबंधित जितने भी तरह की विधाएं हैं या जो इसकी भावनाएं हैं वह सब इस एक पंक्ति में सन्निहित है। जरा आप इस पर गौर करके देखिए, आपदा पीड़ितों का दुख इसमें झलकेगा। सरकार की संवेदनशीलता इसमें झलकती है।

सरकार का दायित्व भी इससे प्रकट होता है तो इन सब चीजों को सन्निहित करके जो माननीय मुख्यमंत्री अक्सर कहा करते हैं कि सरकार के खजाने पर आपदा पीड़ितों का पहला हक है यह आपने जो प्राधिकरण का टैगलाइन बना दिया है, हम इसके लिए हृदय से आपको बधाई देते हैं। साधुवाद देते हैं। तरह–तरह की आपदाएं हैं। आप सभी मान कर चलिए। हमलोग तो बिहार वासी हैं। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण मतलब भौगोलिक अवस्थिति के लिहाज से हम लोग बहुत भाग्यशाली नहीं हैं।

कोई ऐसी आपदा नहीं है, जो हम लोगों को नहीं सताती है या हम लोग उसमें प्रताड़ित नहीं होते हैं और उसमें हमारा कोई दोष भी नहीं है। 73ः इलाका बाढ़ प्रवण है और इसके लिए हम लोग तो दोषी नहीं हैं। नदियां नेपाल से आती हैं। लेकिन आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में जितनी तरह की आपदाएं होती हैं, एक से भी बिहार अछूता नहीं रहता। बाढ़ है, तो सुखाड़ है। शीतलहर है तो लू का चपेट भी है। आगजनी पछुआ हवा में अगलगी का कांड होता है तो भूकंप भी आता है। और बाकी तो मुख्यमंत्री जी ने सड़कें इतनी अच्छी बना दी है और गाड़ियों की गति गति इतनी तेज हो गई है कि वह भी दुर्घटना के रूप में एक आपदा के रूप में हमारे सामने है।

> ***"सरकार के खजाने पर आपदा प्रभावितों का पहला अधिकार है। माननीय मुख्यमंत्री जी बराबर कहते रहते हैं और आपदा प्रबंधन से संबंधित जितने भी तरह की विधाएं हैं या जो इसकी भावनाएं हैं वह सब इस एक पंक्ति में सन्निहित है। जरा आप इस पर गौर करके देखिए, आपदा पीड़ितों का दुख इसमें झलकेगा। सरकार की संवेदनशीलता इसमें झलकती है और सरकार का दायित्व भी।"***

आपदा जोखिम निवारण के लिए अलग–अलग जो मानक संचालन प्रक्रिया आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने बना दिया है, शायद आपको अंदाजा नहीं होगा कि गांव में ग्रामीण क्षेत्रों में खासकर गरीब लोग जो किसी दुर्घटना अथवा आपदा के शिकार होते हैं, उनको उस पीड़ा के क्षण में कितनी बड़ी मदद मिल जाती है। इसका एहसास पीड़ित परिवार ही समझता है और हमलोग उसको देखते हैं और उनको मदद करके इनका लाभ लेने में वहां तक पहुंचाने में सहायक होते हैं।

हम एक ही चीज अनुरोध करेंगे प्राधिकरण से कि आप बचाव और इसके उपाय तो बताते ही हैं लेकिन माननीय मुख्यमंत्री जी ने उनके लिए.....जो संजय झा जी ठीक ही कह रहे थे कुंतल बाबा और वही बातें.....जो भी मुख्यमंत्री जी या सरकार की तरफ से उनको जो सहायता का प्रावधान किया गया है, इसके संबंध में भी लोगों के बीच में जागरूकता हम लोग तो अपने स्तर से करते ही रहते हैं अगर बचाव के साथ–साथ जो पीड़ित होने पर लाभ की व्यवस्था है, उसकी जागरूकता हो जाए और हमारे डिस्ट्रिक्ट के पदाधिकारियों का जो संवेदीकरण होता है, अगर वह हो जाए तो इसका लाभ और भी ज्यादा होगा और हम समझते हैं कि जो इसमें उपाध्यक्ष हैं और जो सदस्यगण हैं, इतने सक्रिय हैं कि निश्चित ही आने वाले दिनों में यह आपदा प्रबंधन प्राधिकरण बिहार के आपदा पीड़ितों की सेवा करने में सरकार की और ज्यादा मदद कर सकेगा, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ। धन्यवाद।

# आज भी कोरोना की नियमित रिपोर्ट लेते हैं सीएम

## श्री संजय कुमार झा, माननीय मंत्री, जल संसाधन, बिहार का संबोधन

**(मंच पर विराजमान माननीय मुख्यमंत्री, अन्य अतिथियों व सभागृह में मौजूद लोगों का अभिवादन करने के उपरांत)**

मैं मैं दो–तीन बात सिर्फ आपके बीच में रखना चाहता हूं। जिस विभाग का काम मुख्यमंत्री जी ने मुझे देखने को दिया है, जल संसाधन विभाग, और यह तो खासकर उत्तर बिहार में हरेक साल का अफेयर (मामला) हो गया है कि फ्लड (बाढ़) आता है। बाढ़ को दैवीय प्रकोप ही मानते हैं लोग। बाढ़ के समय जमीनी स्तर पर प्रशासनिक तंत्र को कैसे काम करना है, पूरा प्रोटोकॉल क्या होता है, कहां कैंप लगेगा, कैसे कैंप लगाकर वहां खाना बनेगा, यह सारा पिछले 15 साल में तैयार किया गया है। मुझे याद है, मैं बिहार के जिस क्षेत्र से आता हूं, वह मिथिला क्षेत्र है, 2007 में नई सरकार बनी और कुछ दिन बाद ही भयंकर बाढ़ आ गई। यह कोसी में कुसहा से पहले की बात है। पहली बार लोगों के घरों तक सरकार ने एक क्विंटल अनाज पहुंचाया। पुरानी बात हो गई है। अनाज सही मायने में लोगों के घरों तक एक क्विंटल पहुंच गया। यहां बैठकर शायद हम इसका प्रभाव नहीं समझ पाते, लेकिन जहां बाढ़ आती है, लोग दाने–दाने को मोहताज हो जाते हैं, वहां पर उनके लिए एक क्विंटल अनाज बहुत मायने रखता है। इसी का नतीजा है कि नीतीश कुमारजी को पूरे क्षेत्र में आज भी कुंटलिया बाबा के नाम से लोग जानते हैं।

दूसरा, काम जो मैंने देखा है, हमलोगों के जीवन में कोरोना से बड़ी कोई आपदा नहीं आई। अचानक लॉकडाउन हो गया। बड़ी संख्या में पूरे बिहार के लोग जो जहां थे, वहीं फंस गए और लगा कि सबसे ज्यादा समस्या बिहार को ही होगी। मुझे याद है मुख्यमंत्री जी ने कोरोना काल में लॉकडाउन के बाद बिहार के लोग जो बाहर थे, उनके अकाउंट में शायद एक–एक हजार रूपया सीधे ट्रांसफर करवाया। ऐसा करने का कोई मैकेनिज्म तब नहीं था। इसे बनाया गया। गांवों में, पंचायतों में कोरोना का कैंप लगा... यहां बैठकर मुख्यमंत्री जी वीडियो से देखते थे कि कहां खाना कहां बन रहा है, डॉक्टर कहां हैं, मेडिसिन कहां है, तो इतनी छोटी–छोटी चीज का ध्यान रखते हैं मुख्यमंत्री जी। आज भी देश में संभवतः वे अकेले चीफ मिनिस्टर हैं, जो कोरोना की क्या स्थिति है, प्रतिदिन एक बार रिपोर्ट देख लेते हैं। चीजें खत्म हो जाती हैं। लोग भूल जाते हैं। लेकिन उस समय कोरोना प्रबंधन जिस हिसाब से बिहार सरकार ने किया, वह असाधारण बात थी। मैं धन्यवाद देता हूं आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को....मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएं आदरणीय उदय कांत मिश्रा जी और उनकी टीम को है।

### कुंटलिया बाबा!

मिथिला में 2007 की बाढ़ में अनाज लोगों के घरों पर एक–एक क्विंटल पहुंचाया गया। जहां बाढ़ आती है, लोग दाने–दाने को मोहताज हो जाते हैं, वहां पर उनके लिए एक क्विंटल अनाज बहुत मायने रखता है। इसी का नतीजा है कि नीतीश कुमारजी को पूरे क्षेत्र में आज भी कुंटलिया बाबा के नाम से लोग जानते हैं। यह उनका योगदान है।।

# प्राधिकरण को सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहूंगा

## श्री शाहनवाज, माननीय मंत्री, आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार का संबोधन

**(मंच पर विराजमान माननीय मुख्यमंत्री व अतिथियों और सभागृह में मौजूद लोगों का अभिवादन करने के उपरांत)**

आज बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की स्थापना के गौरवशाली 15 वर्ष पूरे करने पर मैं आप सभी का तहे दिल से हार्दिक अभिनंदन करता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में विगत 15 वर्षों के सफर में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने कई उपलब्धियां हासिल की, जो काबिलेतारीफ है। बिहार के आपदा प्रबंधन मंत्री के रूप में प्रभार लेने के दिन से ही मैं आप सभी के सहयोग से विभाग को सुदृढ़ करने एवं बिहारवासियों को आपदा की घड़ी में हरसंभव सहायता पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध एवं प्रयत्नशील हूं। माननीय मुख्यमंत्री महोदय का कुशल नेतृत्व, मार्गदर्शन, भरपूर सहयोग हम सबको मिलता रहता है। यह माननीय मुख्यमंत्री महोदय का कुशल नेतृत्व एवं दूरदर्शिता है कि उन्होंने राज्य के 38 जिलों में चरणबद्ध तरीके से इमरजेंसी रिस्पांस फैसिलिटी सेंटर के निर्माण तथा आपदा जैसे संवेदनशील विषय को लेकर प्रत्येक जिला में आपदा का विशेष कैडर गठित करने का निर्णय लिया जिसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री को अपने और पूरे बिहारवासियों की ओर से धन्यवाद देता हूं। आभार प्रकट करता हूं।

सर्वविदित है कि आपदाओं को पूरी तरह रोका नहीं जा सकता। किंतु इसके बेहतर प्रबंधन से इनसे होनेवाली क्षति को कम जरूर किया जा सकता है। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण इस दिशा में अपने स्थापना काल से लगातार प्रयासरत है। इसी क्रम में प्राधिकरण कई प्रशिक्षण एवं जन जागरूकता कार्यक्रम समय–समय पर आयोजित करते आ रहे हैं ताकि आम जनमानस आपदा से जुड़े विभिन्न पहलुओं से अवगत हो सके तथा उनमें इससे जूझने की, लड़ने की क्षमता विकसित हो सके। प्राधिकरण द्वारा चलाए जा रहे प्रमुख कार्यक्रमों में दिव्यांगों की सुरक्षा, मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम, डूबने से होने वाली मृत्यु की रोकथाम से संबंधित कार्यक्रम, सुरक्षित नौका परिचालन, अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम, वज्रपात के संबंध में कार्य योजना से संबंधित कार्यक्रम एवं भूकंपरोधी भवनों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए अभियंताओं, राजमिस्त्रियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम, पंचायत प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त प्राधिकरण ने शैक्षणिक संस्थानों के साथ समन्वय एवं सहयोग स्थापित कर आपदा जोखिम न्यूनीकरण डिजास्टर रिस्क रिडक्शन के क्षेत्र में अनेक पहल की है जिसका आनेवाले दिनों में डिजास्टर रिस्क रिडक्शन के क्षेत्र में प्रभाव पड़ेगा तथा बिहार इस क्षेत्र के अग्रणी राज्यों में शामिल होगा। मैं प्राधिकरण परिवार को आश्वस्त करना चाहता हूं कि मेरे स्तर पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को किसी प्रकार का सहयोग अपेक्षित होगा तो मैं सदैव तत्पर रहूंगा। आप तमाम लोगों का पुनः बिहार में स्वागत है और बहुत–बहुत धन्यवाद।

# मिलकर काम करें तो आपदामुक्त भारत का सपना होगा साकार

## स्थापना दिवस पर आयोजित तकनीकी सत्र में उभरे विचार

आपदा की कोई सीमा नहीं होती। किसी एक राज्य में आपदा आने पर उसका कम या ज्यादा, परोक्ष या

अपरोक्ष प्रभाव कई राज्यों पर होता है। ऐसे में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में अगर सभी राज्य मिलकर काम करें तो आपदा मुक्त भारत का सपना साकार हो सकता है। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के 15वें स्थापना दिवस समारोह के मौके पर आयोजित तकनीकी सत्र में विभिन्न राज्यों से आए वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने यह विचार रखे। संवेदनशील समुदाय पर आपदाओं का प्रभाव, इससे निपटने की चुनौतियां और बेहतर कार्य प्रबंधन विषय पर हुए क्षेत्रीय सम्मेलन में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के पूर्व उपाध्यक्ष अनिल कुमार सिन्हा ने कहा कि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में ओड़िशा ने अद्भुत कार्य किया है। तमाम राज्यों को इससे सीखना चाहिए। हर राज्य में कुछ न कुछ बेहतर हो रहा है। हम सभी एक–दूसरे से सीख सकते हैं। वर्ष–1999 में ओड़िशा में आए सुपर साइक्लोन (चक्रवाती तूफान) में गांव के गांव मिट गए। इस हादसे से सबक लेते हुए ओड़िशा ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में ऐसा अद्भुत कार्य किया कि उसके बाद उससे ज्यादा तीव्रता वाले तूफान फैलिन, हुदहुद व फनी में भी वहां अपेक्षाकृत कम नुकसान हुआ। गांव–गांव में शेल्टर हाउस बना दिए गए। समय रहते सभी को वहां पहुंचाया गया। बिहार में आपदा प्रबंधन के कार्यों की प्रशंसा करते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के दूरदर्शी नेतृत्व में बिहार इस क्षेत्र में भी अव्वल रहा है। आपदा प्रबंधन का प्रणेता रहा। मेरी समझ में पहली बार इस तरह का कोई क्षेत्रीय सम्मेलन पूरे देश में कहीं आयोजित किया गया है। प्राधिकरण परिवार इसके लिए बधाई का पात्र है। श्री सिन्हा ने कहा कि हमें हैजर्ड (खतरा) और डिजास्टर (आपदा) के अंतर को समझना होगा। हर हैजर्ड जरूरी नहीं कि डिजास्टर में तब्दील हो जाए। किसी बड़े रेगिस्तानी क्षेत्र में भूकंप का खतरा हो सकता है, पर यह आपदा में तब्दील होगा, इसकी संभावना बहुत ही कम है क्योंकि वहां आबादी नहीं होती। संरचनाएं भी कम होती हैं। आपदा प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जेसी पंत की अगुआई में बनी उच्चस्तरीय कमेटी ने जब अपनी अंतिम रिपोर्ट दी तो उसका टैगलाइन था – टुवर्ड्स डिजास्टर फ्री इंडिया (आपदामुक्त भारत की दिशा में)। इस सपने को साकार करना हम अगर चाहते हैं, तो सभी राज्यों को बहुत गंभीरता से और आपसी सहयोग–समन्वय के साथ आगे बढ़ना होगा।

इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य श्री मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि वज्रपात से होने वाले नुकसान को कम करने के लिए प्राधिकरण बहुत गंभीरता से कार्य कर रहा है। माननीय सदस्य श्री पी एन राय ने स्वयं इस कार्य को अपने हाथों में लिया है। वज्रपात की घटनाओं का पूरे राज्य में व्यापक अध्ययन कराया गया। अब उन चुनिंदा जिलों में, जहां वज्रपात से मौत की घटनाएं

ज्यादा होती हैं, प्राधिकरण पायलट प्रोजेक्ट के तहत कार्य कर रहा है। हमारा इरादा हर गांव में हूटर/सायरन लगाने का है। यह सायरन अपनी अनोखी ऊंची आवाज में 8 से 9 किलोमीटर के क्षेत्रफल में रह रहे लोगों को वज्रपात से बचने के लिए सतर्क कर देगा। इसके अलावा हम गांव–गांव में तड़ित चालक ऊंची जल मीनारों और सरकारी भवनों पर लगाने की योजना बना रहे हैं जो कम से कम 70 से 80 मीटर के दायरे में होनेवाले वज्रपात से सुरक्षा प्रदान करेगा। एक आवरण तैयार करेगा।श्री वर्मा ने कहा कि आपदा से बचाव में मौसम की सटीक भविष्यवाणी बहुत मायने रखती है। मुझे खुशी है कि बिहार मौसम सेवा केंद्र इस दिशा में बहुत ही बढ़िया काम कर रहा है। अब मौसम की भविष्यवाणी नगर ही नहीं, पंचायत के स्तर पर भी बहुत सटीकता से की जा सकती है। आपने देखा होगा कि एक मोहल्ले में पानी पड़ रहा है, पड़ोस के मोहल्ले में बारिश नहीं होती। बिहार मौसम सेवा केंद्र इस बारीक स्तर पर जाकर मौसम की भविष्यवाणी करने में सक्षम है। यह सब जानकारी आपके मोबाइल पर होगी। एक ऐप के जरिये आप इसे देख सकते हैं। कर्नाटक में जो काम 20 साल में हुआ, वही काम बिहार में हम लोग दो साल के अंदर करने की दिशा में बढ़ रहे हैं। इस सम्मेलन में शिरकत कर रहे आप सभी राज्यों के सहयोग से हम इसे और बेहतर बना सकेंगे।

हर आपदा को रिमोट सेंसिंग डाटा से एनालाइज कर जीआईएस प्लेटफार्म पर शेयर करने की योजना है। मान लें कि आप पटना से राजगीर जा रहे हैं। रास्ते में कुहासा है या नहीं, यह आप जानना चाहते हैं तो यह जानकारी भी आपके मोबाइल पर उपलब्ध होगी। जल्द ही यह सेवा हम लोग यहां बिहार में लांच करने जा रहे हैं और इसके लिए बिहार मौसम सेवा केंद्र के डॉ सीएन प्रभु और उनकी टीम बधाई की पात्र है। **सीएसआईआर, बेंगलुरु के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. केसी गौड़ा** ने आपदा पूर्व चेतावनी और भविष्यवाणी विषय पर अपने व्याख्यान में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने बताया कि अर्ली वार्निंग वार्निंग सिस्टम के जरिए 48 घंटा पहले किसी भी आपदा की जानकारी अब दी जा रही है। इससे आपदाओं से निबटने के लिए प्रशासन को तैयारियों का समय मिल जाता है।

**बिहार मौसम सेवा केंद्र के संयुक्त निदेशक (तकनीकी) डॉ सीएन प्रभु** ने प्रजेंटेशन के माध्यम से बताया कि हर प्रखंड में वेदर स्टेशन कार्यरत है। पंचायतों तक इसका विस्तार करने की योजना पर काम चल रहा है। अगले साल तक पंचायत स्तर पर बाढ़–सुखाड़ के साथ ही कुहासे की जानकारी भी मिलने लगेगी। वज्रपात की सूचना क्षेत्र विशेष में 30 मिनट पहले ही दी जा रही है। हालांकि इसे और प्रभावकारी बनाने की कोशिश जारी है। चेतावनी के बावजूद लोग सतर्क नहीं हो रहे हैं और जानें जा रही, यह चिंता का विषय है। गांव–गांव में तड़ित चालक लगाए जाएंगे ताकि वज्रपात से जान–माल का नुकसान कम से कम हो। चौबीसों घंटे काम करने वाला हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया जा रहा है। बिहार पर आधारित मौसम सेवा केंद्र का

ऐप जल्द ही लांच किया जाएगा। इसमें मोबाइल स्मार्टफोन के जरिए हर एक व्यक्ति अपने गांव का मौसम भी देख पाएगा।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी एन राय ने की। इस सत्र में **मध्य प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, भोपाल के उप निदेशक श्री सौरभ कुमार** ने एमपीएसडीएमए द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा की। उनका प्रमुख जोर औद्योगिक सुरक्षा उपायों पर था। उन्होंने मध्य प्रदेश में अपनाई जाने वाली सर्वोत्तम प्रथाओं को भी साझा किया। उन्होंने भोपाल गैस त्रासदी के बाद से बढ़ी जागरूकता के बारे में बात की। मध्य प्रदेश में 22 प्रमुख स्थानों पर कुल 92 संभावित खतरे वाले उद्योग हैं। उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आपदा प्रबंधन योजनाएं बनाई जाती हैं। नियमित मॉक ड्रिल, निगरानी प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण का कार्य किया जाता है। इन उद्योगों को जोड़ने वाले राजमार्गों और पाइपलाइनों को भी रसायनों के परिवहन के कारण खतरनाक माना जाता है।

**उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के वरिष्ठ सलाहकार ब्रिगेडियर (सेनि) पीके सिंह** ने 15 साल की यात्रा में कई मील के पत्थर हासिल करने के लिए बीएसडीएमए की सराहना की। उन्होंने कहा कि यूपी की सभी नदियां गंगा में मिल जाती हैं और बिहार में बहती हैं। इसलिए हमें पूर्व चेतावनी, सूचना साझा करने और सभी पहलुओं पर मिलकर काम करने की एक संयुक्त रणनीति बनाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए यदि यूपी के बलिया जिले और बिहार के सीवान जिले में बाढ़ की स्थिति आती है तो दो राहत आश्रय बनाने के बजाय हम प्रभावित आबादी के लिए साझा आश्रय बना सकते हैं। उन्होंने बताया कि यूपीएसडीएमए ने नियमित पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन पाठ्यक्रमों को भी शामिल करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। उत्तर प्रदेश बिजली गिरने से हर साल 330 लोगों की जान चली जाती है। इसे कम करने के लिए यूपीएसडीएमए ने सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एनसीएल) के साथ अतिसंवेदनशील जिलों में लाइटनिंग अरेस्टर लगाने की पहल की है।

**ओड़िशा राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के वरिष्ठ सलाहकार श्री मेघनन्द बेहरा** ने बताया कि उनका राज्य कई प्रकार की आपदाओं से ग्रस्त है जिसमें चक्रवात सबसे प्रमुख है। उन्होंने 1999 के सुपर साइक्लोन और इससे सीखे गए सबक का उल्लेख किया। वर्ष 2001 में ओडिशा डिजास्टर रैपिड एक्शन फोर्स खोज और बचाव के लिए गठित किया गया। समुद्र तट के साथ लगी पंचायतों में समर्पित बहुउद्देश्यीय आश्रय भवन बनाए गए। गैर सरकारी संगठनों के साथ अच्छा समन्वय कायम किया गया। आपातकालीन संचार के लिए ओडिशा में समुद्र तट पर 122 अलर्ट सायरन टावर हैं। आपदा की सटीक और समय पर भविष्यवाणी सुनिश्चित की गई।

**झारखंड सेंट्रल यूनिवर्सिटी, रांची के जियोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. किरण जालम** ने विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेले के दौरान बाबाधाम में भीड़ प्रबंधन व्यवस्था के बारे में चर्चा की। पुलिस बल, स्वयंसेवकों, गैर सरकारी संगठनों और नियंत्रण कक्ष की तैनाती के अलावा उन्होंने बेहतर भीड़ प्रबंधन के लिए उपयोग की जाने वाली आधुनिक तकनीकों के बारे में चर्चा की। बताया कि देवघर में पीपुल काउंटिंग मशीन लगाई गई। सीसीटीवी से निगरानी और भक्तों की आवाजाही को नियंत्रित किया जा रहा है। साथ ही एकीकृत यातायात प्रबंधन प्रणाली, आगंतुक पंजीकरण और बारकोड रिस्टबैंड के साथ–साथ बाबाधाम के मुख्य मंदिर में तड़ित रोधक स्थापित किए गए।

# संवाद, सहयोग और समन्वय का सिलसिला आगे बढ़े

## माननीय उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत मिश्र का समापन वक्तव्य

मुझे खुशी है कि "संवेदनशील समुदाय पर आपदाओं का प्रभाव, इससे निपटने की चुनौतियां और बेहतर कार्य प्रबंधन" विषय पर क्षेत्रीय सम्मेलन में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, ओड़िशा, झारखंड और कर्नाटक से आए प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। हमने बहुत गंभीर विषयों पर चर्चा की। हम यहां से लेकर क्या जा रहे, यह ज्यादा मायने रखता है। मेरी समझ से तीन–चार चीजें तो हमें फौरन कर लेनी चाहिए। विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधि, जो यहां मौजूद रहे, सबसे पहले हम सभी मिलकर एक औपचारिक समूह गठित कर लें ताकि संवाद, सहयोग और समन्वय का सिलसिला आगे बढ़ता रहे।

दूसरा काम, हमलोग यह करें कि अपने–अपने राज्यों के आसपास के राज्यों को भी इस समूह में जोड़ कर एक वृहद समूह बनाने का प्रयास करें। जैसे, हमारे आसपास छत्तीसगढ़ है, पश्चिम बंगाल है। उन राज्यों के प्रतिनिधि, चाहे जो भी कारण रहा हो, नहीं आ पाए। ऐसे छूट गए राज्यों को भी हमें इस समूह में शामिल करना चाहिए। अगर आप सभी इससे सहमत हैं तो मैं यह प्रस्ताव रखता हूं।

तीसरी चीज, हमें अपनी मुहिम में नेपाल के गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) को जोड़ना होगा। अंतरराज्यीय ही नहीं, इसे अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देना होगा। बिहार और उत्तर प्रदेश में बाढ़ की एक प्रमुख वजह नेपाल की नदियां होती हैं। पड़ोसी देश में क्या चल रहा होता है, इसकी हमें जानकारी नहीं होती। अगर हम नेपाल में धरातल पर काम कर रहे सक्रिय एनजीओ के लगातार संपर्क में रहें, तो हमें वहां हो रही गतिविधियों की फौरन सूचना मिल सकती है, जो हमारी आपदा पूर्व तैयारियों में सहायक साबित होगा।

चौथी चीज, हमलोग साझा न्यूनतम कार्यक्रम (कॉमन मिनिमम प्रोग्राम) की तर्ज पर एक ठोस कार्ययोजना बना लें। किस दिशा में कैसे आगे बढ़ना है, प्राथमिकताएं क्या होंगी, यह सब स्पष्ट होना चाहिए। अगली बैठक अगले ही महीने दिसंबर में कर लें। पूर्व चेतावनी प्रणाली (अर्ली वार्निंग सिस्टम) और भविष्यवाणी (फ्यूचर फोरकास्टिंग) पर हम मिलकर काम करें, आगे बढ़ें। मैं बिहार मौसम सेवा केंद्र को भी इसमें जोड़ना चाहूंगा। हम सभी राज्य मिलकर इस पर काम करें, तो इसके ठोस नतीजे सामने आएंगे।

हमारे स्थापना दिवस समारोह में आप सबने शिरकत की। इसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं और आपकी इजाजत से समारोह का औपचारिक समापन करने की घोषणा करता हूं।

# स्थापना दिवस : कैमरे की नजर में

# सोनपुर मेला में प्राधिकरण के पैवेलियन का उद्घाटन

## – पैवेलियन में लगे स्टॉल पर जन जागरूकता एवं क्षमतावर्द्धन गतिविधियां

## – आपदा प्रबंधन मंत्री बोले, जितनी होगी जागरूकता, नुकसान उतना ही कम

विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेले में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के पैवेलियन का उद्घाटन 10 नवंबर को मेला क्षेत्र में माननीय मंत्री, आपदा प्रबंधन श्री शाहनवाज ने किया। प्राधिकरण के माननीय सदस्यद्वय श्री पीएन राय और श्री मनीष कुमार वर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्र वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से ऑनलाइन इस समारोह में मौजूद रहे। अपने उद्घाटन भाषण में माननीय मंत्री श्री शाहनवाज ने आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आपदा की घड़ी में विभाग के साथ–साथ प्राधिकरण के तमाम कर्मी हमेशा मुस्तैद मिलते हैं। आपदा से पहले लोगों को सतर्क और सचेत करना इबादत के समान है। पूजा है, प्रार्थना है। हम ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच जागरूकता फैलाने का काम करेंगे ताकि आपदा में कम से कम क्षति हो। मंत्री ने कहा कि मेला हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की निशानी है। इस मेले में आपको हर चीजें मिलेंगी। बिहार के हर हिस्से, हर वर्ग और समुदाय के लोग मिलेंगे। आपस में मिलते–बतियाते और मेला घूमते। यही हमारे बिहार की खूबसूरती है। देश की पहचान है। प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी. एन. राय ने कहा कि समाज को सुरक्षित और बिहार को सुरक्षित बनाना है। इसके लिए प्राधिकरण बड़े पैमाने पर जागरूकता और झमतावर्द्धन अभियान चलाएगा। यह लंबे समय तक चलनेवाला कार्य है जब तक कि समाज का हरेक तबका सुरक्षित न हो जाए।

इस मौके पर निर्माण कला मंच के कलाकारों ने सड़क दुर्घटना से जुड़े एक नाटक का मंचन किया। इस मौके पर आस–पास के गांवों में भ्रमण के लिए आपदा जागरूकता रथ को मंत्री ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पैवेलियन में प्राधिकरण से जुड़े हितभागी संस्थानों और संगठनों ने विभिन्न प्रकार के स्टॉल लगाए। इनमें आपदाओं के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा। माननीय मंत्री ने सभी स्टॉल का बारीकी से निरीक्षण किया।

इस अवसर पर प्राधिकरण के सचिव श्री मीनेंद्र कुमार (भा.प्र.से.), डॉ. गगन, अपर समाहर्ता, सारण, श्री रविन्द्र कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी, आपदा प्रबंधन विभाग, श्री संदीप कुमार, माननीय उपाध्यक्ष के विशेष कार्य पदाधिकारी, समादेष्टा, उप समादेष्टा, सेकेंड–इन–कमांड, एसडीआरएफ एवं अन्य पदाधिकारी, हितधारक तथा एमएसएसपी कार्यक्रम से जुड़े स्थानीय विद्यालय के छात्र–छात्रा उपस्थित थे।

गौरतलब है कि विभिन्न आपदाओं के प्रति आमजन को सचेत करने के उद्देश्य से प्राधिकरण सोनपुर मेले में बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाता है। प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक और परिचर्चा आदि के माध्यम से लोगों को आपदाओं में सुरक्षित रहने की जानकारी दी जाती है। विभिन्न आपदाओं से बचाव के उपायों एवं आपदा जोखिम न्यूनीकरण के उद्देश्य से हितधारकों यथा एसडीआरएफ, सिविल डिफेंस, बिहार अग्निशमन सेवाएं, सीड्स, जीपीएसवीएस, डॉक्टर्स फॉर यू, जेंडर इक्वैलिटी, युगांतर, कम्युनिटी वॉलंटियर्स और भूकंपरोधी सुरक्षित मकान के स्टॉल पर लोगों को आपदाओं से बचने की जानकारी मुहैया कराई गई। साथ ही जे. एम. इंस्टीट्यूट, पटना और आशादीप दिव्यांग स्कूल, दीघा के मूक–बधिर बच्चों ने मेले के मुख्य पंडाल में विभिन्न आपदाओं से बचाव का संदेश नाटक के माध्यम से दिया।प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष महोदय के द्वारा मेला के दौरान कई दिन प्राधिकरण के पैवेलियन का भ्रमण करके हितधारकों को आवश्यक सुझाव एवं बच्चों

का उत्साहवर्द्धन किया गया। साथ ही एसडीआरएफ, अग्निशाम सेवाएं एवं जिला प्रशासन के पदाधिकारियों की संयुक्त टीम गठित करके सोनपुर मेल क्षेत्र में भगदड़ एवं अगलगी संबंधी आपदाओं से बचाव के उद्देश्य से सुरक्षा ऑडिट करने का निदेश दिया गया। उक्त टीम के द्वारा समर्पित किए गए प्रतिवेदन के अनुसार आगामी वर्षों में मेला के दौरान संभावित जोखिम एवं खतरों के प्रति जिला प्रशासन को अवगत कराते हुए तदनुसार तैयारी के उपायों को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

निर्माण कला मंच नुक्कड़ नाटक टीम के माध्यम से पैवेलियन में एवं मेला परिसर में सड़क सुरक्षा विषय पर तीन स्थलों पर और नुक्कड़ नाटक मंचन दोस्ताना सफर के कलाकारों ने मेला परिसर में घूम–घूमकर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, दहेज प्रथा और कन्या भ्रूण हत्या से संबंधित जानकारी दी। सर्वमंगला सांस्कृतिक मंच के द्वारा शीतलहर से बचाव तथा आपसदारी कला मंच के द्वारा डूबने की घटनाओं तथा नौका दुर्घटनाओं की रोकथाम के संबंध में जागरूकता हेतु नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया गया ।

एसडीआरएफ, सिविल डिफेंस एवं तथा सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम के मास्टर ट्रेनर्स के द्वारा संयुक्त रूप से सोनपुर गंडक नदी पर स्थित सीढ़ी घाट पर डूबने से बचाव के संबंध में जानकारी दी गई। डेमो किया गया। उत्कर्ष एक पहल और डाक्टर्स फॉर यू के चिकित्सकों ने मेलार्थियों की निःशुल्क स्वास्थ जांच कर परामर्श दिया। एसडीआरएफ के स्टॉल पर विभिन्न आपदाओं के दौरान उपयोग किए जाने वाले उपकरणों व औजारों की प्रदर्शनी लगाई गई, इनके उपयोग के तरीके बताए गए। इसके अलावा एसडीआरएफ के विशेषज्ञों द्वारा हृदय पुनर्जीवित करने की प्रक्रिया (सीपीआर) एवं प्राथमिक उपचार की अन्य विधियों के बारे में लोगों को अवगत कराया गया। बल की नुक्कड़ नाटक टीम के द्वारा पैवेलियन के अंदर एवं बाहर सर्पदंश प्रबंधन विषय पर नुक्कड़ नाटक का प्रस्तुतीकरण किया गया।

बिहार अग्निशाम सेवा के स्टॉल पर अग्नि सुरक्षा के संबंध में अग्निशामक यंत्रों और उपकरणों का प्रदर्शन किया गया। इन उपकरणों तथा अग्निशामक यंत्र के उपयोग की विधि के बारे में लोगों को अवगत कराया गया। बिहार अग्निशाम सेवा की नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जन जागरूकता एवं प्रचार दृप्रसार सामग्री का वितरण किया गया।

सिविल डिफेंस के स्टॉल पर आपदाओं के स्थिति में उपयोगी विभिन्न बचाव संबंधी 16 उपकरणों का प्रदर्शन किया गया। सिविल डिफेंस के वालन्टियर्स द्वारा क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर घरेलू संसाधनों जैसे–कंबल, चादर, गंमछा, रस्सी, दुपट्टा आदि से स्ट्रेचर बनाकर हताहत व्यक्ति को सुरक्षित स्थान पर ले जाने, फायर मैन लिफ्ट आदि के बारे में मॉक प्रदर्शन किया गया। स्वयंसेवी संस्था जीपीएसवीएस के स्टॉल पर पर्यावरण संरक्षण से संबंधित उपायों के संबंध में एवं कृषि वानिकी के बारे में जन मानस को अवगत कराया गया। साथ ही पंचवटी मॉडल व अकिरामियावाकी विधि आदि के बारे में लोगों को जानकारी प्रदान की गई। महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से जेंडर इक्वैलिटी संस्था के द्वारा लोगों को विभिन्न गृह उद्योगों को शुरू करने के बारे में जानकारी दी गई।

प्राधिकरण के भूकंपरोधी भवन निर्माण संबंधी स्टॉल पर भूकंपरोधी भवन निर्माण के सही तरीके यथा रिंग में हुक के उपयोग के महत्व, कवर ब्लॉक का उपयोग, बीम एवं बैंड में विभेद, कन्क्रीट में पानी की मात्रा की जांच, छड़ बांधने का उपयुक्त तरीके, पुराने घरों के रेट्रोफिटिंग आदि के बारे आगंतुकों को जानकारी मिली।

प्रशिक्षित कम्युनिटी वॉलंटियर्स (एनसीसी उड़ान) के स्टॉल पर आगंतुकों को भूकंप, अगलगी, वज्रपात एवं सड़क दुर्घटनाओं से बचाव के उपायों के बारे में बताया गया। मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम (सुरक्षित शनिवार) के अंतर्गत प्राधिकरण के पैवेलियन में प्रत्येक दिन औसतन 40–60 बालक–बालिकाओं के बीच स्वच्छता एवं सफाई, स्वास्थ्य, भूकंप से सुरक्षा, अग्नि सुरक्षा, सड़क दुर्घटनाओं से बचाव, बाल सुरक्षा एवं सर्पदंश प्रबंधन आदि विषयों पर प्रशिक्षकों द्वारा डेमो एवं चित्रकारी प्रतियोगिता के द्वारा अभिमुखीकरण किया गया। प्राधिकरण के द्वारा बालक–बालिकाओं को टी–शर्ट, टोपी, पेंसिल, रबर, कटर, कलर, स्केच पेन आदि सामग्रियों का वितरण भी किया गया। प्राधिकरण के स्तर से आपदाओं से बचाव हेतु जन जागरूकता रथ के माध्यम से सोनपुर मेला क्षेत्र में एवं आस–पास के ग्रामीण इलाकों में लोगों को विभिन्न आपदाओं से बचाव के बारे में जानकारी प्रदान की गई। आपसदारी कला मंच के 4 कलाकारों द्वारा जोकर की रंग बिरंगी पोशाक पहन कर प्राधिकरण के पैवेलियन की गतिविधियों का प्रचार प्रसार किया गया।

# सामंजस्य का प्रतीक – सोनपुर मेला!

**के. विक्रम राव**

कभी भारत का सबसे लंबा रेलवे प्लेटफॉर्म सोनपुर होता था। आज पूर्व–मध्य रेलवे के इस महत्वपूर्ण स्टेशन का प्लेटफार्म घटकर सातवें पायदान पर आ गया है। पहले नंबर पर कर्नाटक का हुबली है। बीच में गोरखपुर, कोल्लम, खड़गपुर, बिलासपुर और झांसी आ गए। कुछ ऐसा ही सोनपुर के विश्वविख्यात पशु मेले के साथ भी हुआ। पारंपरिक कार्तिक पूर्णिमा (8 नवंबर 2022) के स्थान पर इस वर्ष यह उत्सव रविवार (20 नवंबर 2022) को होगा। कारण है कि उस दिन चंद्र ग्रहण लगा था। अतः नई तिथि है अगहन माह की एकादशी (रविवार 20 नवंबर 2022)। चंद्र ग्रहण के कारण सूतक लगा था। इसका प्रभाव आठ घंटे पहले से ही लागू हो गया। इस वजह से हरिहर नाथ मंदिर का पट बंद रहा। यह प्रथम बार है कि कार्तिक मेले पर चंद्र ग्रहण लगा। इसका असर धार्मिक महत्ता के हिसाब से बुरा पड़ रहा है।

यह मेला मात्र मवेशी मेला नहीं है। वैदिक आस्था से जुड़ा उपलक्ष्य है। हालांकि इस पर संकट तो छा गया है। वैसा ही देश की पुरातन धरोहर पशु हाथी पर भी है, जो मेले का खास आकर्षण है। इसके बेशकीमती धवल दंत के कारण इसके अस्तित्व पर भी मुसीबत आई है। एशिया के अन्य हाथियों की तुलना में भारत का सर्वाधिक महंगा होता है। इसे 1959 में ही संकटग्रस्त वन्यजीव घोषित किया गया था। इसीलिए आठवीं पंचवर्षीय योजना से इसके संरक्षण हेतु विशेष प्रावधान रखे गए थे। इन्हीं हाथियों के कारण सोनपुर चर्चित हो गया। आस्थावानों के लिए तीर्थ स्थल भी। यहीं भगवान विष्णु ने अपने भक्त हाथी की मगरमच्छ के दांतों से रक्षा की थी। यहीं अलौकिक सूत्र गजेंद्र मोक्ष उच्चारित हुआ था। इस पूरे भूभाग को हरिहर (विष्णु–शिव) क्षेत्र कहा गया है। बिहार प्रदेश का तीर्थविशेष। हरिहर का यह संयुक्त तीर्थस्थान है। यह गंगा व नारायणी (बड़ी गंडक) के संगम तट पर पटना के पास सोनपुर में स्थित है। यही समन्वयात्मक हरिहरनाथ का मंदिर

है। कार्तिक पूर्णिमा को यहां विशाल मेला होता है। इसमें देशदेशांतर के लाखों लोग सम्मिलित होते हैं। वाराह पुराण में हरिहरक्षेत्र का माहात्मय निगदित है। यूं तो आश्चर्य की बात है कि सबसे बलशाली चौपाये हाथी को तुलनात्मक रूप से उससे कम शक्तिवाले मगर से टक्कर हुई। दोनों मे जंग लंबी अवधि तक चली इसी नारायणी–गंगा के संगम तट पर। पौराणिक कथा है कि यहां कोनहरा घाट पर विष्णु के दो भक्त गज और ग्राह भिड़ गए थे। इस संदर्भ में एक गाथा है। द्रविड़ देश में एक पाण्ड्यवंशी राजा राज्य करते थे। नाम था इंद्रद्युम्न। वे भगवान की आराधना में ही अपना अधिक समय व्यतीत करते थे। उनकी आस्था थी कि भगवान विष्णु ही मेरे राज्य की व्यवस्था करते हैं। अतः वे प्रभु की उपासना में ही दत्तचित्त रहते थे। एकदा महर्षि अगस्त्य अपने समस्त शिष्यों के साथ वहां पहुंच गए। मौनव्रती राजा इंद्रद्युम्न परम प्रभु के ध्यान में निमग्न थे। इससे महर्षि अगस्त्य ने कुपित होकर इंद्रद्युम्न को शाप दे दिया– "इस राजा ने गुरुजनो से शिक्षा नहीं ग्रहण की है और अभिमानवश परोपकार से निवत्त होकर मनमानी कर रहा है। ऋषियों का अपमान करने वाला यह राजा हाथी के समान जड़बुद्धि है इसलिए इसे घोर अज्ञानमयी हाथी की योनि प्राप्त हो।"

गजेन्द्र योनि मे जन्मे राजा एक दिन अपने साथियों सहित प्यास से व्याकुल थे। वह कमल की गंध से सुगंधित वायु को सूंघकर एक चित्ताकर्षक विशाल सरोवर के तट पर जा पहुंचा। गजेन्द्र ने उस सरोवर के

निर्मल, शीतल और मीठे जल में प्रवेश किया। पहले तो उसने जल पीकर अपनी तृषा बुझाई, फिर जल में स्नान कर अपना श्रम दूर किया। तभी अचानक गजेन्द्र ने सूंड उठाकर चीत्कार की। पता नहीं किधर से एक मगर ने आकर उसका पैर पकड़ लिया था। गजेन्द्र ने अपना पैर छुड़ाने के लिए पूरी शक्ति लगाई परन्तु उसका वश नहीं चला, पैर नहीं छूटा।" निश्चय के साथ गजेन्द्र मन को एकाग्र कर पूर्वजन्म में सीखे श्रेष्ठ स्त्रोत द्वारा परम प्रभु की स्तुति करने लगा।" गजेन्द्र की स्तुति सुनकर भगवान विष्णु प्रकट हुये। गजेन्द्र को पीड़ित देखकर भगवान विष्णु गरुड़ पर आरूढ़ होकर अत्यंत शीघ्रता से सरोवर के तट पर पहुंचे। जब जीवन से निराश तथा पीड़ा से छटपटाते गजेन्द्र ने हाथ में चक्र लिए गरुड़ारूढ़ भगवान विष्णु को तेजी से अपनी ओर आते देखा तो उसने कमल का एक सुन्दर पुष्प अपनी सूंड में लेकर ऊपर उठाया और बड़े कष्ट से कहा– "नारायण ! जगद्गुरो ! भगवान ! आपको नमस्कार है।" तब भगवान विष्णु गरुड़ की पीठ से कूद पड़े और गजेन्द्र के साथ ग्राह को भी सरोवर से बाहर खींच लाए और तुरंत अपने तीक्ष्ण चक्र से ग्राह का मुंह फाड़कर गजेन्द्र को मुक्त कर दिया।

यह हरिहर योग है जिसका उल्लेख कई ग्रंथों तथा इतिहास में है। श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कंध अध्याय में 33 श्लोक है जिसे हाथी ने सुनाया फिर विष्णु की मदद मांगी थी। सोनपुर के संगम तट पर ऐसा हुआ था। जनकपुरी स्वयंवर में जाते वक्त राम यहीं आए थे। आराधना की थी। वैदिक धर्म के अनुरूप गमनीय तथ्य यह है कि शैव तथा वैष्णव जन सदैव युद्धरत रहते थे। इस हरिहर योग में दोनों में सामंजस्य स्थापित हो गया। सामंजस्य सोनपुर आकर सीखें। **(फेसबुक वॉल से साभार। लेखक देश के जाने–माने पत्रकार हैं।)**

# सात जिलों में चलेगी वज्रपात से बचाव संबंधी कार्ययोजना

राज्य में वज्रपात से हर साल सैकड़ों जानें जाती हैं। मौसम विभाग और इंद्रवज्र जैसे ऐप्प पर मौसम पूर्वानुमान में वज्रपात की सूचना प्रसारित होने के बाद भी आम लोग सचेत और सतर्क नहीं हो पा रहे हैं, यह चिंता की बात है। वज्रपात की घटनाओं में हताहत होने पर बिहार सरकार की ओर से मुआवजा आदि देने का प्रावधान किया गया है।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण वज्रपात से मौतों की रोकथाम के लिए प्रतिबद्ध है। संकलित आंकड़ों के अनुसार बिहार राज्य में वज्रपात की घटनाओं में वर्ष–2020 में 443, 2021 में 276 एवं 2022 में 376 लोगो की मृत्यु हुई है। इन घटनाओं के संबंध में एक प्राथमिक अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं–

- शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में वज्रपात से होनेवाली मृत्यु अधिक है।
- वज्रपात के कारण मृत्यु मानसून के पूर्व एवं बाद में भी हो रही है।
- कृषि, पशुपालन की गतिविधियों से जुड़े लोग अधिक प्रभावित हुए हैं।

वज्रपात की घटना होने पर जान–माल की व्यापक क्षति होती है, जिसमें लोगों और पशुओं की जानें चली जाती हैं। अतः इन घटनाओं की रोकथाम हेतु विभिन्न संस्थाओं एवं विभागों की किये जाने वाली गतिविधियों तथा उत्तरदायित्व सबंधी क्रियान्वयन हेतु दिनांक 23.11.2022 को वज्रपात/ठनका से बचाव एवं रोकथाम संबंधी राज्य आपदा शमन निधि के अंतर्गत वज्रपात से अतिप्रभावित कुल 07 जिलों के लिये प्रस्ताव समर्पित किया गया। इस कार्यक्रम में जागरुकता कार्यक्रम एवं पूर्व चेतावनी संबंधी हूटर, सायरन तथा बचाव हेतु एरेस्टर लगाये जाने के बाबत विस्तृत चर्चा की गई।

इस संबंध में बताया गया कि प्रथम चरण में कार्ययोजना कुल 07 जिलों गया, रोहतास, बांका, जमुई, पटना, नवादा एवं औरंगाबाद जिलों में क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना है। माननीय सदस्य पीएन राय, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा अवगत कराया गया कि वज्रपात से प्रभावित अति प्रवण 07 जिलों में जागरूकता कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक एवं पूर्व चेतावनी संबंधी गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जाए। तदुपरांत वज्रपात/ठनका से बचाव एवं रोकथाम संबंधी सर्वाधिक प्रभावित जिलों की कार्ययोजना की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया।

# आपदाओं से लड़ने को युवा हो रहे तैयार

## सामुदायिक स्वयंसेवकों और एनसीसी कैडेटों को दिया जा रहा प्रशिक्षण

हमारा बिहार बहु–आपदा प्रवण राज्य है। फलतः हमारे गांव, पंचायतों, प्रखंड एवं जिलों में विभिन्न तरह की आपदाएं आती रहती हैं। पंचायतों में कुछ नौजवान आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु जरूरी ज्ञान और हुनर सीख लें तो वे अपने गांव, पंचायत, प्रखंड एवं जिले को आपदाओं से सुरक्षित रख सकते हैं। इस उद्देश्य हेतु प्रशिक्षण के माध्यम से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य के नौजवानों/नवयुवतियों को प्रशिक्षित कर आपदाओं के प्रत्युत्तर हेतु तैयार कर रहा है ताकि आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करने में वे अपने समुदाय के मददगार हो सकें। प्रशिक्षण का उद्देश्य यह भी है कि युवा अपने गांव, पंचायत, प्रखंड एवं जिला स्तर पर विभिन्न आपदाओं की प्रवणता की जानकारी हासिल कर सकें एवं उन आपदाओं के जोखिम–न्यूनीकरण तथा प्रबंधन में समुदाय की सहायता करने हेतु स्वयं को तैयार रखें। इसी क्रम में नवंबर माह में दिनांक 07.11.2022 से 18.11.2022 जिला बांका के कुल 50 स्वयंसेवकों को नागरिक सुरक्षा

प्रशिक्षण संस्थान, बिहटा, पटना में 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया। नवम्बर माह तक पूर्णिया, मुजफ्फरपुर, प. चम्पारण, पूर्वी चम्पारण, बांका एवं अररिया जिले के कुल 853 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया गया है।

इसी कड़ी में प्राधिकरण बड़ी तादाद में एनसीसी कैडेट्स को भी प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं को लेकर सतर्क व सचेत कर रहा है। राज्य के विभिन्न जिलों में आयोजित शिविरों के दौरान इन्हें सड़क सुरक्षा के उपायों, प्राथमिक उपचार एवं अन्य जानकारियां प्रदान की जाती है। एनसीसी उड़ान एवं एसडीआरएफ के सहयोग से विभिन्न आपदाओं के बारे में जागरूकता/संवेदीकरण एवं मॉकड्रिल इन शिविरों में सम्पन्न कराया जाता है। नवंबर माह–2022 में राज्य के कई जिलों में उपरोक्त शिविर आयोजित किए गए। पांच नवंबर को एनसीसी ग्रुप मुख्यालय, पटना में 325 प्रतिभागियों को, 7 नवंबर को एमएस कॉलेज, मोतिहारी में 425 प्रतिभागियों को, 21 नवंबर को चाणक्य विश्वविद्यालय, कोइलवर में 365 प्रतिभागियों को, 26 नवंबर को एसपीएम कॉलेज, उदंतपुरी, नालंदा में 530 प्रतिभागियों को, 28 नवंबर को जेएलएन कॉलेज, डेहरी ऑन सोन में 435 प्रतिभागियों को और पुनः 30 नवंबर को एनसीसी ग्रुप मुख्यालय, पटना में 305 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया गया।

# जीविका दीदियों ने भी कसी कमर

## प्रशिक्षित किए जाने हेतु "मास्टर ट्रेनर्स" का प्रशिक्षण कार्यक्रम

सामाजिक बुराइयों के खात्मे की बात हो या नारी सशक्तिकरण की दिशा में कारगर हस्तक्षेप का या फिर शराबबंदी जैसे क्रांतिकारी पहल का जिक्र हो, एक नाम जो हमेशा सामने आता है, वह है जीविका दीदियों का। आजीविका मिशन से जुड़ी महिलाएं राज्य में विकास की नई गाथा लिख रही हैं। ऐसे में भला जब आपदाओं से लड़ने की बात हो तो, वे पीछे कैसे रह सकती हैं। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण जीविका दीदियों को आपदाओं से लड़ने के लिए प्रशिक्षित कर रहा है। जीविका दीदियों को "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषय पर प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इन दीदियों को प्रशिक्षित किए जाने हेतु तीन दिवसीय राज्यस्तरीय "मास्टर ट्रेनर्स" का द्वितीय मॉड्यूल ''मानवजनित आपदाएं'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 9–11 नवम्बर, 2022 से राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, पटना में प्रारंभ किया गया। इन प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स के माध्यम से जीविका दीदियों को प्रशिक्षित कर जागरूक करने का लक्ष्य है ताकि वे स्वयं, परिवार एवं समाज को किसी भी प्रकार की आपदा से सुरक्षित रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। उपरोक्त के आलोक में माह नवम्बर–2022 में चार बैच के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 127 मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षित किया गया। इनमें अरवल, अररिया, पटना, पूर्णिया, मधुबनी, गोपालगंज, प. चम्पारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, दरभंगा, कटिहार, सिवान, पूर्वी चम्पारण, भागलपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय, सहरसा, सुपौल, किशनगंज एवं लखीसराय जिलों के मास्टर ट्रेनर्स शामिल थे।

## जागरुकता कार्यक्रम के तहत मास मैसेजिंग

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की ओर से विभिन्न आपदाओं में 'क्या करें, क्या न करें' की जानकारी एसएमएस के माध्यम से लाखों की संख्या में राज्य की जनता को दी जाती है। अक्टूबर, 2022 में कुल **1355875** मास मैसेजिंग किए गए, जिसमें जीविका दीदी, आशा, जिला परिषद्, सीओ, डीएम और आपदा प्रबंधन विभाग के कर्मियों, प्रशिक्षित मुखिया, सरपंच एवं आईसीडीएस, जिला परिषद एवं विकास मित्र के लाभार्थी शामिल हैं।

# कोसी क्षेत्र में बाढ़ पूर्वानुमान पर आइआइएससी करेगा काम

देश के ख्यातिलब्ध शैक्षणिक संस्थान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (आइआइएससी), बेंगलुरु के साथ बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने एक सहमति पत्र (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया है। इस एमओयू के माध्यम से कोसी क्षेत्र में बाढ़ पूर्वानुमान का नया मॉडल विकसित किया जाएगा। देश में यह अपनी तरह का नया प्रयोग है। इसका उद्देश्य कोसी क्षेत्र में बाढ़ से होने वाले नुकसान को कम से कम करना है।

बिहार देश के सर्वाधिक बाढ़ प्रभावित राज्यों में शुमार है। देश की कुल बाढ़ प्रभावित आबादी में 22.1 प्रतिशत हिस्सा बिहार का ही है। बिहार के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 73.06 फीसदी इलाका बाढ़ की मार झेलने को विवश है। बिहार में देश के अन्य बाढ़ प्रभावित राज्यों की तुलना में नुकसान ज्यादा होता है। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक देश के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का 16.5 प्रतिशत बिहार में है लेकिन इससे नुकसान 22.8 प्रतिशत का है। उत्तर बिहार में मुख्य तौर से गंगा, कोसी, बागमती, गंडक, बूढ़ी गंडक, कमला, बलान, अधवारा समूह और कनकई नदियां कहर ढाती हैं, वहीं दक्षिण बिहार में सोन, पुनपुन और फल्गु नदियों से बाढ़ आती है।

बिहार में जो नदियां बहती हैं, उनका उद्गम स्थल ज्यादातर नेपाल में ही है। नेपाल से नदियां बहती हुई बिहार में आती है। नेपाल में जब बारिश अधिक होती है तो नदियों का जलस्तर बढ़ने लगता है और फिर बिहार में भी नदियां रौद्र रूप दिखाना शुरू कर देती हैं। करीब 50 छोटी बड़ी नदियां नेपाल से आए पानी से बाढ़ लाती हैं। नेपाल के बराह क्षेत्र में बांध निर्माण के लिए सर्वे का काम आज भी दोनों ही देशों की सरकारों के उदासीन रवैये के कारण अटका पड़ा है। नेपाल के साथ–साथ भारत की केन्द्र सरकार भी इसके निर्माण में दिलचस्पी नहीं दिखा रही।

## भूकंप में कैसे रहें सुरक्षित

- भूकंपरोधी भवनों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए अनुभवी राजमिस्त्रियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में एनएसडीसी से समन्वय का कार्य लगातार किया जा रहा है। इस संदर्भ में एनएसडीसी द्वारा राजमिस्त्रियों के प्रशिक्षण के संबंध में माननीय उपाध्यक्ष एवं सदस्यद्वय के समक्ष प्रस्तुतीकरण दिया गया है।
- भूकंप से मकानों व अन्य संरचनाओं को सुरक्षित रखने के लिए आईआईटी, पटना द्वारा रैपिड विजुअल स्क्रीनिंग मार्गदर्शिका (आरवीएस गाइडलाइंस) तैयार कर ली गई है। इस संबंध में दिनांक 30 नवंबर को आईआईटी, पटना की ओर से माननीय उपाध्यक्ष एवं माननीय सदस्य के समक्ष प्रस्तुतीकरण दिया गया जिसके आलोक में प्राप्त सुझावों को अब इस गाइडलाइन में शामिल किया जा रहा है।

डेंगू से पीड़ित मरीजों एवं उनके परिजनों
हेतु
आवश्यक सूचना
स्वास्थ्य विभाग
प्रायः डेंगू बुखार का उपचार सामान्य विधि से होती है, जिसके लिए पारासिटामोल सुरक्षित दवा है। मरीजों में प्लेटलेट की संख्या 10,000 से कम होने अथवा रक्तस्त्राव के लक्षण दिखने पर ही विशेष परिस्थिति में प्लेटलेट्स चढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है, जो पर्याप्त मात्रा में निम्न रक्त केन्द्रों में उपलब्ध है:–
निम्न सरकारी रक्त केन्द्रों में भी प्लेटलेट्स की सुविधा उपलब्ध है
क्र. रक्त केन्द्र का नाम एवं पता संपर्क सूत्र
1 *पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, अशोक राजपथ, पटना। डॉ. निहारिका, 9835261061
2 *मॉडल रक्त केन्द्र, जय प्रभा अस्पताल, कंकड़बाग, पटना। डॉ. आनन्द किशोर, 9431062836
3 नालन्दा मेडिकल कॉलेज अस्पताल, अगमकुआँ, पटना। डॉ. अपूर्वा रंजन, 9971818317
4 *इन्दिरा गाँधी आयुर्विज्ञान संस्थान, बेली रोड, पटना डॉ. शैलेश कुमार, 8544413216
5 *अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान, फुलवारीशरीफ, पटना। डॉ. नेहा सिंह, 9993028936
6 दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, दरभंगा डॉ. संजीव कुमार ठाकुर, 9470003249
7 श्री कृष्णा चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, मुजफ्फरपुर डॉ. संजय कुमार, 9576460125
8 *जo लाल नेहरु चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, भागलपुर डॉ. रेखा झा, 9934456029
9 सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, पूर्णियां डॉ. बी.सी. झा, 9431471486
10 पावापुरी चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, नालंदा डॉ. रिंकी कुमारी, 9934345888
11 जननायक कर्पूरी ठाकुर चि० महाविद्यालय अस्पताल, मधेपुरा डॉ. अंजनी कुमार, 9431448950
12 इण्डियन रेडक्रास सोसाइटी, गाँधी मैदान, पटना। डॉ. देवेन्द्र नाथ, 9931682048
निम्न निजी रक्त केन्द्रों में भी प्लेटलेट्स की सुविधा उपलब्ध है
क्र. रक्त केन्द्र का नाम एवं पता संपर्क सूत्र
1 *महावीर कैंसर संस्थान, रक्त केन्द्र, पटना डॉ. एस.के.सिन्हा, 9334128429
2 *पारस एच.एम.आर.आई. अस्पताल रक्त केन्द्र, पटना डॉ. शान्तनु कुमार, 9431073889
3 *रूबन मेमोरियल अस्पताल रक्त केन्द्र, पटना डॉ. अनील कुमार सिंह, 8406003121
4 *निरामया रक्त केन्द्र, कंकड़बाग, पटना डॉ. शीला शर्मा, 8409052924
5 *नेता जी सुभाष चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल डॉ. शिवेन्द कुमार सिन्हा, 9431497910
6 *प्रथमा रक्त केन्द्र, सगुना मोड़, दानापुर, पटना डॉ. नीरज कुमार निराला, 7975971659
7 *माँ रक्त केन्द्र, पटना डॉ. रणवीर कुमार, 9334114487
8 कटिहार चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, कटिहार डॉ. नेयाज अहमद, 9955215438
9 MGMMC चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, किशनगंज डॉ. एम.एन. सिंह, 9934923283
10 भारत रक्त केन्द्र, पटना डॉ. रचना जैन, 9430906383
11 कुर्जी हॉली फेमली अस्पताल, पटना डॉ. रीना रंजन, 8210138107
12 नारायण चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, जमुहार, रोहतास डॉ. (मो.) वकील अहमद, 7903811005
13 वात्सलय रक्त केन्द्र, पटना डॉ. कौशलेन्द्र, 9910261483
14 मैक्स 7 अस्पताल रक्त केन्द्र, पूर्णियां डॉ. एम.के. झा, 9431230719
15 नन्दीपत मेमोरियल अस्पताल एण्ड रिसर्च केन्द्र, सीतामढ़ी डॉ. श्वेता गुप्ता, 8002898008
16 किरण चैरिटेबल रक्त केन्द्र, पूर्णियां डॉ. बी.के. गुप्ता, 7739411581
17 मधुबनी चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल, मधुबनी डॉ. आर.के. झा, 8863816396
18 शुक्ला रक्त केन्द्र, दरभंगा डॉ. एम.के. भगत, 7982298421
19 RDDJM चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल, तुर्की, मुजफ्फरपुर डॉ. आयुष्मान सिन्हा, 8521970345
20 मे. सिटी रक्त केन्द्र, मुजफ्फरपुर डॉ. अभिलाषा, 8434082666
21 जीवन ज्योति अस्पताल रक्त केन्द्र, बिहारशरीफ, नालन्दा डॉ. प्रीति रंजना, 9430284828
सरकारी अस्पतालों में भर्ती डेंगू के मरीजों के लिए राज्य के सरकारी रक्त अधिकोषों में प्लेटलेट्स निःशुल्क उपलब्ध है।
104 अधिक जानकारी के लिए हेल्पलाइन पर संपर्क करें
*चिन्हित रक्त केन्द्रों में Apheresis (Single Donor Platelet) की सुविधा भी उपलब्ध है।
प्लेटलेट्स, रक्त एवं प्लाज्मा की उपलब्धता की जानकारी भारत सरकार के वेबसाईट ई-रक्त कोष एवं मोबाईल एप्प पर उपलब्ध है।
राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार
BSACS
PR No.- 8774 (Health)D. 2022-23